सेरोगेट मदर के भावात्मक और भौतिक पहलू

डा. नीलिमा दुबे
एशोशिएट प्रोफेसर
न्यू होराइज़न कालेज ,बैंगलूरू

विकसित तकनीक ने मानव को क्या नहीं दिया ? उपलब्धियों की सूची बहुत लंबी है । चिकित्सा क्षेत्र में कई असंभव कार्य संभव हुए हैं । ऐसी ही उपलब्धियों में से एक है संतान की इच्छा रखने वाले नि:स्मतान दंपत्तियोंके लिए सेरोगेट मदर का वरदान ।

वर्तमान समय की इस तकनीकी सच्चाई ने कई जीवन बदल दिए हैं । उनके भी जिनको संतान की चाह है, परंतु किसी कारणवश बच्चे को जन्म नहीं दे पा रहे हैं । तथा उनकी भी जिन पर ईश्वर की कृपा है कि वे बार–बार स्वस्थ्य बच्चे को जन्म दे सकतीं हैं,मां बन सकती हैं । वैसे भी कहा जाता है कि संपूर्ण स्त्रत्व मातृत्व के बाद ही प्राप्त होता है । यही धारणा सेरोगेट मां के कान्सेप्ट को अधिक महत्वपूर्ण बनाती है ।

पूरे विश्व में सेरोगेट मदर का यह तथ्य जोर–शोर से चल रहा है,और लोकप्रिय भी हो रहा है । वास्तविकता में यह विचार पद्धति क्या है , इसे जान लेना आवश्यक है । आधुनिक चिकित्सा की इस प्रणालि के द्वारा नि:संतान दंपत्ति अपने ही बच्चे को जन्म देने का सपना सकार कर पाते है । इसके अंतर्गत दंपत्ति के अंडाणु और शुक्राणु को परखनली के द्वारा निशेचित कर मां के गर्भ में विकसित होने के लिए ट्यूब के द्वारा छोड दिया जाता है । यही प्रक्रिया आई वी एफ में भी अपनाई जाती है ,लेकिन सेरोगेसी में अन्य स्वस्थ महिला का भी योगदान होता है जो बच्चे को जन्म देने के लिर नौ महिने के लिए अपनि कोख दान करती है । इस पुरि प्रक्रिया के बीच एक कानूनी करार भी होता है,जो इस बात कि पुष्टी करता है कि जिस बच्चे का जन्म होगा उस पर जन्म देने वाली महिला का कोई अधिकार नहीं होगा ।

पैसे की दृष्टि से देखें तो यह बहुत खर्चीली प्रक्रिया है । आज अनेक ऐसे केन्द्र हैं जो यह सेवा उपलब्ध करवा रहे हैं । इस आधार पर खूब व्यवसाय आगे भी बढा रहे हैं । विदेशों में इसका खर्च बहुत अधिक होता है जिसकी तुलना में भारत में खर्च कम आता है । यहि कारण है कि तीन सालों में भारत ' सेरोगेट मदर हब ' के नाम से पहचाना जाने लगा है ।

सेरोगेट मदर के संबंध में भारत में २०१६ का कानून विषेश महत्व रखता है जिसके अनुसार कोई सिगल महीला या पुरुष सेरोगेट मदर की सहायता से संतान प्राप्त नहीं कर सकता । इस प्रक्रिया के लिए दंपत्ति होना अनिवार्य है ।

भारत में गरीबी होने के कारण दो से तीन लाख रुपयों में किसी महिला को सेरोगेट मां बनने के लिए तैयार किया जा सकता है ।

भौतिक उपलब्धि कि नजरो से देखें तो हर पहलू से यह लाब का सौदा है । दंपत्ति को संतान का सुख मिलता है,सेरोगेट मां को उसके हिस्से का पैसा और डाक्टरों को पैसा सहित उपलब्धि ।

इस आलेख के द्वारा इसके भावनात्मक पहलू की ओर ध्यान खींचना चाहूंगी । जो महिलाएं अपनी कोख में दूसरों की संतान को नौ महीने तक रखती हैं , उनमें कई भावात्मक और शारीरिक परिवर्तन होते हैं जिन्हें केवल फायदे के लिए नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । तथा इन परिस्थिति से निपटने के लिए शामिल केन्द्रों और परिवार की भूमिका क्या होनी चाहिए ,इस पर भी विचार होना बाकी है । बच्चे को जन्म देने के बाद महिला को शारीरिक रुप से सामान्य होने में समय लगता है इसकी सभी ओर से उपेक्षा हि होती है । टाइम्स आफ इंडिया तथा बी.बी.सी. की एक रिपोर्ट के आधार पर यह साफ है कि विश्व में अगर सेरोगेसी के ५०० सौ मामले होते है तो उनमें से ३०० सौ भारतीय महिलाएं सेरोगेट मदर होती हैं ।

चेन्नई में तीन सेरोगेट मदर का साक्ष्तकार लिया गया ।जिनकी उम्र ३२,३५,३८ साल की थी । तीनों ने अपने अनूभव बांटे जिसमें कुछ सच समान थे । सभी ने स्वीकारा कि आर्थिक तंगी के कारण इन्होंने सेरोगेट मदर होना स्वीकार किया ।उनमें से दो नौ महीने तक होस्टल में रही थीं । उस अवधि में उन्हें अपने परिवार से मिलने की अनुमति नहिं थी । ऐसे में उन्हें कैदी सा अहसास हुआ । एक महिला जो अपने घर में रही, उसके लिए भी इतना आसान नही था अपने बच्चों और परिवार के सदस्यों को जबाब देना । तीनों ने बताया कि बच्चे के जन्म के समय वे बेहोश थीं तथा होश आने के पहले ही बच्चा वहां से हटा लिया गया, जबकि वे एक बार बस नवजात शिशु को देखना चाहतीं थीं । ऐसा न होने पर वे कई महिनों तक मानसिक रूप परेशान रहीं । इस डिप्रेशन से बाहर आने में उनको महिनों लगे । बाद में तय किया कि वे दोबारा इस प्रक्रिया हिस्सा नहीं बनेगी ।

यह कुछ ऐसे पहलू हैंजो शायद सीधे तौर पर खतरनाक नहीं दिखाई देते परंतु भविष्य में हो सकता है कि एक चुनौति के रुप में सामने आये । साथ ही यह भी साफ है कि कई परिणामों को भविष्य ही तय करेगा ।

****